Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, MAY-JUNE, 2018, VOL- 5/45

विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

मधु उपाध्याय, Ph. D.
प्राचार्य, महात्मा गॉंधी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बांसवाड़ा (राज.)
drmadhu.upadhyay@gmail.com

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भारतीय संस्कृति में मनुष्य को प्रकृति पुत्र माना जाता है। मनुष्य इस सुन्दर प्रकृति के आंगन में ही बडा होता है । मानव सभ्यता हमेशा ही प्रकृति से तालमेल बिठाकर अपना विकास करती रही है । यह तालमेल हजारों वर्षो तक बना रहा । पीपल व केले के पेड़ की पूजा भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति आदर की सूचक मानी जाती रही है । इतना ही नहीं बरगद, कदम्ब, पीपल, नीम, तुलसी जैसे छायादार एवं औषधि तुल्य वृक्षों को धार्मिक भावनाओं से जोडकर इनकी सुरक्षा की भावना जागृति की गई । नदियों को माता की संज्ञा दी गई ।

मात्र वृक्ष और जल ही नहीं अपितु गाय, बैल आदि जानवरों को पूज्य बनाकर इनकी हत्या पर रोक लगाई गई । पर्यावरण और मानव संस्कृति में गहरा सम्बन्ध हैं । मानव व प्रकृति के अटूट सम्बन्धों पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि, मानव सभ्यता का विकास ही पर्यावरण के प्रति जागरूकता के कारण हुआ ।

प्रकृति के अपने नियम होते हैं । मनुष्य यदि इन प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करता है तो मनुष्य ही नही बल्कि समस्त जीव एवं सृष्टि के लिये हानिकारक परिस्थितियॉ उत्पन्न हो जाती हैं ।

19वी शताब्दी के बाद मानव मन में अपने विकास की असाधारण लालसा पनपी जिसके फलस्वरूप तीव्र औद्योगिकीकरण वनों की अन्धाधुंध कटाई, शहरीकरण, कृषि योग्य भूमि का दुरूपयोग जनसख्ंया में असाधारण वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनो का अविवेकपूर्ण दोहन आदि अनेकों ऐसे कारण हैं जिससे मानव व प्रकृति के तालमेल में अन्तर आने लगा । यहॉ यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि आने वाला समय पानी के लिये युद्ध जैसी स्थिति बना देगा । आज जल सकंट का कारण मानव द्वारा प्रकृति से खिलवाड़ करने का ही नतीजा है ।

मनुष्य ने अपने आर्थिक विकास, उत्थान तथा विलासिता हेतु प्रकृति का अमानवीय व अविवेकपूर्ण दोहन किया जिसका परिणाम प्राकृतिक असंतुलन के रूप में हमारे सामने हैं ।

शिक्षक बालक जीवन का आदर्श होता है । एक शिक्षक बालक की दिशा को चाहे जैसी दिशा दे सकता है । शिक्षक विद्यार्थियों के माध्यम से पर्यावरण को शुद्ध रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

। कहा भी गया है ''प्रवर्त्तितां डूव प्रदीपात्'' अर्थात पुस्तकों के निर्जीव माध्यम से नहीं गुरू के सजीव सम्पर्क से ही ज्ञान की ज्योति से हृदय का दीपक ज्योतित हो उठता है । (योगराज, 1999) सिर्फ शिक्षक ही नहीं अपितु माता–पिता भी बच्चे को पर्यावरण से होने वाले लाभ और हानि से विस्तृत रूप से अवगत करा सकते हैं ।

परिवार के बाद समाजीकरण की दूसरी कड़ी के रूप में विद्यालय बालक को प्रशिक्षिक करते हैं ताकि बालक की पर्यावरण के प्रति सामान्य चेतनाको बढाया जा सके और एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में समाज में खड़ा किया जा सके । यदि हम दैनिक क्रियाकलाप पर ध्यान दें तो पाते हैं कि विद्यालय में पढ़ रहे विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अभाव है । पर्यावरण प्रदूषण के खतरों ने एक ऐसी आवश्यकता उत्पन्न कर दी है जिस पर तुरन्त आक्रमण करना आवश्यक हैं । (गिहार एवं सक्सेना 1999)

आज देश के सभी विद्यालयें में पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता हैं ।

इस हेतु आवश्यक है कि, शिक्षकों में पर्यावरणीय संरक्षण अभिवृत्ति का निर्माण उनके प्रशिक्षण स्तर पर मुख्य रूप से किया जाये । विशेष रूप से उनके प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में निर्धारित मूलभूत उद्देश्यों के संदर्भ में । शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी अपने प्रशिक्षणकाल में पर्यावरण के प्रति शोध दृष्टि रखते हुये पर्यावरण से संबंधित समस्याओं के प्रति समाधानकर्त्ता के रूप में तैयार हो सकें और भविष्य में विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षक के रूप में निर्मित कर सकें । आज पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण ही यही है कि प्रत्येक स्तर पर शिक्षा के माध्यम से ज्ञानात्मक उद्देश्य की प्राप्ति तो की जा रही है परन्तु ज्ञान के साथ जुड़े अभिवृत्ति व कौशल (क्रिया) के प्रति किसी का ध्यान ही नहीं यानि ज्ञान के साथ जुड़े अभिवृति व कौशल (क्रिया) के बीज परिवार एवं विद्यालय से ही पडते है । इस प्रकार अध्यापक बालक की अभिवृत्ति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता हैं ।

शोधार्थी द्वारा बॉसवाडाजिले के चार बी.एड. महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति निर्माण में महाविद्यालयी पाठ्यक्रम की क्या भूमिका है, अपने शोध का उद्देश्य निर्धारित किया ।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी के समक्ष निम्न प्रश्न उत्पन्न होते हैंः–

1. महाविद्यालयी पाठ्यक्रम में पर्यावरण प्रदूषण एवं संरक्षण सम्बन्धी तत्वों का कितना समावेश हैं ।
2. क्या इस पाठ्यक्रम का प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव पडता हैं ।
3. पर्यावरणीय अभिवृत्ति निर्माण में महाविद्यालयी परिस्थिति व वातावरण का क्या योगदान रहता हैं ।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

4. महाविद्यालयी पाठ्यक्रम व प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति भूमिकातथा पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति निर्माण में क्या सम्बन्ध हैं ।

उक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिये शोधकर्ती द्वारा विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है । यथा

1 जनसख्ंया

2 न्यादर्श एवं न्यादर्श तकनीक

3 उपकरण

4 दत्त सकंलन

5 ऑकडो के विश्लेषण में प्रयोग की गई सांख्यीकी तकनीक

जनसख्ंया :–

शोध में दक्षिणी राजस्थान बांसवाडा जनपद के 150 बी.एड. प्रशिक्षार्थियों को चुना गया ।

न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि :–

न्यादर्श चयन हेतु बहुस्तरीय यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया ।

पर्यावरणीय तत्व विश्लेषक आयाम सूची क्रमशः निर्धारित की गई

1 मनुष्य एवं जीव मण्डल आयाम

2 पर्यावरण शिक्षा के स्वरूप एवं क्षेत्र आयाम

3 पर्यावरण शिक्षा की योजना एवं क्रियान्वयन आयाम

4 प्राकृतिक संसाधन संरक्षण आयाम

5 पर्यावरण शिक्षा जागरूकता एक्शन प्रोग्राम आयाम

6 गुणवत्ता जीवन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आयाम ।

7 पर्यावरण शिक्षा जागरूकता मापन ।

विश्वसनीयता –

पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता को 30 प्रशिक्षणार्थियों पर प्रशासित किया गया तथा 20 दिन के अन्तराल के पश्चात् पुनः उसी न्यादर्श पर प्रशासिक किया गया । दोनों प्रशासनों पर प्राप्त अंको के आधार पर सह सम्बन्ध ज्ञात किया गया । यह सह संबंध अर्थात परीक्षण पुनः परीक्षण विश्वसीनयता गुणांक प्राप्त हुआ ।

सम्पूर्ण पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता के लिये स्पीयरमेन ब्राउन प्रोफेसी सूत्र का प्रयोग किया गया ।

वैधता :–

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तुत मापनी की वैधता ज्ञात करने के लिये रूप वैधता व निर्वचन वैधता निर्धारित की गई ।

पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी फलांकन प्रक्रिया 4 बिन्दु प्रणाली पर किया गया जो कि सकारात्मक एवं नकारात्मक पदों के लिये निर्धारित है ।

उपरोक्त पूर्व परीक्षण (टेस्ट) द्वारा शोधकर्ती को पर्याप्त शुद्धता से प्रश्नावली निर्माण में सहायता मिली ।

दत्त सकंलन :–

शोधकर्ती द्वारा उक्त शोध हेतु दो कारकों की भूमिका का अध्ययन किया गया ।

प्रथम कारक – बी.एड. महाविद्यालयी पर्यावरणीय शिक्षा आयाम सम्बन्धी अध्ययन ।

द्वितीय कारक – प्रशिक्षणार्थियों की भूमिका यह दत्त सकंलन दो चरणों में किया गया।

तालिका – 1 पुरूष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के मनुष्य एवं जीव मण्डल आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=148)
पुरूष	75	22.17	2.72	
महिला	75	22.25	2.16	0.19 N.S.

तालिका–1, के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पुरूष तथा महिला प्रशिक्षणार्थियों के अभिवृत्ति स्तर के मध्य पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के मनुष्यएवं जीव मण्डल, आयाम पर कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं। अर्थात पुरूष तथा महिला प्रशिक्षाणार्थी मनुष्य एवं जीवन मण्डल आयाम पर समान अभिवृत्ति स्तर रखते हैं।

तालिका – 2 पुरूष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के पर्यावरण शिक्षा के स्वरूप एवं क्षेत्र आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=148)
पुरूष	75	24.30	3.05	
महिला	75	25.04	2.98	1.48 N.S.

तालिका–2, में प्रदर्शित आंकडे इस ओर इंगित करते है कि पुरूष तथा महिला प्रशिक्षणार्थियों के अभिवृत्ति स्तर के मध्य पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के पर्यावरण शिक्षा के स्वरूप एवं क्षेत्र आयाम पर कोई सार्थत अन्तर नहीं हैं । अर्थात पुरूष तथा महिला प्रशिक्षाणार्थी पर्यावरण शिक्षा के स्वरूप एवं क्षेत्र आयाम पर समान रूप से अभिवृत्ति रखते हैं ।

तालिका – 3 पुरूष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के पर्यावरण शिक्षा की योजना एवं कियान्वयन आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=148)
पुरूष	75	14.46	1.77	
महिला	75	14.92	1.71	1.59 N.S.

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका–3, से स्पष्ट है कि पुरूष तथा महिला प्रशिक्षणार्थी पर्यावरण शिक्षा की योजना एवं क्रियान्वयन आयाम पर एक समान अभिवृत्ति स्तर रखते हैं । ऐसा इसलिए हो सकता है कि हमारा पर्यावरण चारों तरफ से प्रदूषण की समस्या से ग्रसित है ।

तालिका – 4 पुरूष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=148)
पुरूष	75	6.68	1.47	
महिला	75	6.96	1.46	1.16 N.S.

तालिका–4, के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि प्राकृतिक संसाधन संरक्षण पर पुरूष तथा महिला प्रशिक्षाणार्थी के अभिवृत्ति स्तर के मध्य कोई सार्थत अन्तर नहीं हैं ।

तालिका – 5 पुरूष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के पर्यावरण शिक्षा का एक्शन प्रोग्राम आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=148)
पुरूष	75	6.73	1.07	
महिला	75	6.34	1.48	1.82 N.S.

तालिका–5, के अवलोकन से यत ज्ञाह होता है कि पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के एक्शन प्रोग्राम आयाम पुरूष तथा महिला प्रशिक्षाणार्थी समान रूप से अभिवृत्ति स्तर रखते हैं ।

तालिका – 6 पुरूष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के गुणवत्ता जीवन के लिए अन्तराष्ट्रीय सहयोग आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=148)
पुरूष	75	6.0	1.65	
महिला	75	6.25	1.27	1.04 N.S.

तालिका–6, का विश्लेषण इस ओर संकेत करता है कि गुणवत्ता जीवन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आयाम पर पुरूष तथा महिला प्रशिक्षाणार्थी के अभिवृत्ति स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं ।

तालिका – 7 पुरूष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=148)
पुरूष	75	97.28	8.64	
महिला	75	99.28	8.35	1.41 N.S.

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका–7, के अध्ययन से यह परिणाम प्राप्त होता है कि पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी पर महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी, पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में पर्यावरण शिक्षा के लिए अधिक अभिवृत्ति स्तर रखते हैं । तालिका–7 इस ओर संकेत करती है कि महिला शिक्षक प्रशिक्षाणार्थी ने पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक मध्यमान अंक प्राप्त किये ।

परिकल्पना के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष :–

1 पुरूष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के सात आयामों में कमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय व पॉचवे आयामों पर समान रूप से अभिवृत्ति रखने के निम्न कारण हो सकते हैं ।

– आधुनिक समय में पर्यावरण संरक्षण व प्रदूषण सम्बन्धी अधिकाधिक प्रचार प्रसार एवं वातावरण ।

– पर्यावरण के स्वरूप क्षेत्र आदि का ज्ञान विद्यालयी स्तर से आरम्भ हो जाना ।

– एक्शन प्रोग्राम व ज्ञानात्मक और संभावित खतरों का मीडिया पर प्रचार–प्रसार।

अतः उपरोक्त आयामो पर परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं ।

चतुर्थ, छठा व सॉतवे आयामो पर महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है अतः परिकल्पना आंशिक रूप से स्वीकृत व अस्वीकृत होती हैं ।

इसके कारण निम्न हो सकते हैं :–

– वायु प्रदूषण, घटता जल स्तर, बढ़ते रोग आदि से महिला व पुरूष समान रूप से परिचित हैं ।

– परस्पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, सुरक्षा, स्वास्थ्य व जीवन का संरक्षण आदि पर विश्व की परस्पर अन्तनिर्भता से महिला पुरूष बराबर परिचित हैं ।

– आयाम सात में महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति उसकी अधिक संवेदनशीलता के कारण हो सकती है । अतः इस आयाम पर परिकल्पना आंशिक रूप से अस्वीकृत होती हैं ।

उपसंहार एवं शैक्षिक निहितार्थ :–

बांसवाडा आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में विशेषकर शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया यह शोध उनके प्रकृति के करीब रहने समझने और संरक्षण की सोच को जानने के उद्देश्य से किया गया । उन्हें पर्यावरण, प्रकृति व राष्ट्रीय / अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संबंधी योजनाओं की कितनी जानकारी है और उनके अनभिज्ञ क्षेत्रों को जानने के प्रयास हेतु किया गया ।

इन शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी जब जागृत हो जायेगें तो समाज भी पर्यावरण के प्रति संवेदनशील व जागृत हो जायेगा ।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies